

गुरु नानक – सबद ६२
हरि हरि जपहु पिआरिआ गुरमत ले हरि बोल ॥
राग सिरिराग, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब, २२

हरि हरि जपहु पिआरिआ गुरमत ले हरि बोल ॥
मन सच कसवटी लाईऐ तुलीऐ पूरै तोल ॥
कीमत किनै न पाईऐ रिद माणक मोल अमोल ॥ १ ॥
भाई रे हरि हीरा गुर माहि ॥
सतसंगत सतगुर पाईऐ अहिनिस सबद सलाहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥
सच वखर धन रास लै पाईऐ गुर परगास ॥
जिउ अगन मरै जल पाइऐ तिउ तिसना दासन दास ॥
जम जंदार न लगई इउ भउजल तरै तरास ॥ २ ॥
गुरमुख कूड़ न भावई सच रते सच भाइ ॥
साकत सच न भावई कूड़ै कूड़ी पांइ ॥
सच रते गुर मेलिऐ सचे सच समाइ ॥ ३ ॥
मन महि माणक लाल नाम रतन पदार्थ हीर ॥
सच वखर धन नाम है घट घट गहिर ग्मभीर ॥
नानक गुरमुख पाईऐ दइआ करे हरि हीर ॥ ४ ॥ २१ ॥

सार: सार्थक बातचीत करना एक बगीचे की देखभाल करने जैसा है जहां हर भागीदार, वह जिज्ञासु साधक हो या ज्ञानी साधु, अंतर्दृष्टि को अंकुरित करने वाले बीज के रूप में काम करते हैं। हर अनुभव का आदान-प्रदान सत्य के प्रकाश की ओर बढ़ाता है। इस बातचीत को खुले दिल से अपनाकर हम गहरी आध्यात्मिक जड़ें जमा सकते हैं और हमारी जिज्ञासा ज्ञान के वृक्ष की शाखाओं की तरह फैल सकती है जिससे ज्ञान की समझ को पनप और संबंध, विकास और परिवर्तन को बढ़ावा मिल सकता है।

हरि हरि जपहु पिआरिआ गुरमत ले हरि बोल ॥

हे प्यारे साथियों, सारी सृष्टि की एकता पर विचार करो और ऐसा विवेक प्राप्त करो जो एकता पर विचार व्यक्त करने की शक्ति प्रदान करता है।

मन सच कसवटी लाईऐ तुलीऐ पूरे तोल ॥

अपने मन के विचारों को जो परम नैतिकता की कसौटी है उसपर परखें और सत्यापित कर देखें कि क्या यह सच के साथ संतुलित है।

कीमत किनै न पाईऐ रिद माणक मोल अमोल ॥ १॥

प्रेम से भरे हृदय की असली कीमत किसी बहुमूल्य दुर्लभ रत्न की तरह नहीं मापी जा सकता।
(१)

भाई रे हरि हीरा गुर माहि ॥

हे साथी ज्ञान के माध्यम से प्राप्त ध्यानपूर्ण चिंतन का खज़ाना मन में रहता है।

सतसंगत सतगुर पाईऐ अहिनिस सबद सलाहि ॥ १॥ रहाउ ॥

निश्छल साधकों की संगति में उन लोगों के बीच प्रामाणिक अंतर्दृष्टि पनपती है जो दिन-रात सार्थक आध्यात्मिक बातचीत में भाग लेते हैं। (१)(विराम)

सच वखर धन रास लै पाईऐ गुर परगास ॥

सच्चा व्यापार सार्थक बातचीत का प्रतिनिधित्व करता है, धन ज्ञान प्राप्त करने और पूंजी सद्गुणों को अपनाने की प्रतीक है। यह ज्ञान के आलोक की ओर ले जाती है।

जिउ अगन मरै जल पाइऐ तिउ बिसना दासन दास ॥

जिस तरह जल से अग्नि समाप्त हो जाती है, उसी तरह कामनाओं की प्यास विनम्र और समर्पित व्यक्ति के अधीन हो जाती है।

जम जंदार न लगई इउ भउजल तरै तरास ॥२॥

जब मृत्यु के भय पर विजय प्राप्त होती है तब यह स्वयं और दूसरों के लिए जीवन की बाधाओं को दूर करने की शक्ति प्रदान करता है। जैसे विशाल, उत्तेजित महासागर को नाव चला कर पार करना। (२)

गुरमुख कूड़ न भावई सच रते सच भाइ ॥

आध्यात्मिक रूप से जागरूक लोग झूठ से आकर्षित नहीं होते। वह परस्पर एकत्व के जुड़ाव के सत्य की वास्तविकता के प्रति समर्पित रहते हैं।

साकत सच न भावई कूड़ै कूड़ी पांइ ॥

बेईमान एकता के सच का जश्न नहीं मनाते, उनका धोखा झूठ की नींव पर टिका होता है।

सच रते गुर मेलिऐ सचे सच समाइ ॥३॥

जो ईमानदारी को अपनाते हैं वह सर्वव्यापी वास्तविकता के बारे में ज्ञान प्राप्त करते हैं और एकता के सत्य में लीन रहते हैं। (३)

मन महि माणक लाल नाम रतन पदार्थ हीर ॥

जो मन चिंतन को मूल्यवान रत्न मानता है वह अमूल्य गुण का प्रतीक है।

सच वखर धन नाम है घट घट गहिर गमभीर ॥

सच्ची पूँजी आत्मचिंतन के मूल्यवान अभ्यास का प्रतीक है जो प्रकृति में सम्मिलित एक गहन गुण है।

नानक गुरमुख पाईऐ दइआ करे हरि हीर ॥४॥२१॥

नानक कहते हैं कि आध्यात्मिक साधक एकता के अभ्यास की कृपा से ज्ञान प्राप्त करते हैं जो कि अथाह मूल्य का गुण है। (४)(२१)

तत्त्व: गुरु नानक कहते हैं कि असली धन भौतिक संपत्ति नहीं है बल्कि आत्म-चिंतन की ईमानदारी से खोज- अस्तित्व के सार में सम्मिलित गुण है । शांत चिंतन में, आत्मा गहन अंतर्दृष्टि प्रकट करती है जो सांसारिक जीवन से परे है । यह ज्ञान उन लोगों को मिलता है जो ब्रह्मांड के साथ एकता का अभ्यास करने के माध्यम से दिव्यता का पालन करते हैं।

पहलकदमी

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com